Bihar Board Class 7 Social Science History Notes
Chapter 2 नये राज्य एवं राजाओं का उदय

नये राज्य एवं राजाओं का उदय

पाठ का सार संक्षेप

अरब, जो व्यापारिक दृष्टि से गाँव बसाकर रहने लगे थे, आगे चलकर उस क्षेत्र पर अपना राज्य स्थापित कर लिया । इसी समय उत्तर एवं मध्य भारत में राजपूतों का उदय हुआ । इनका उदय गुप्तवंशीय साम्राज्य के पतन के बाद 7वीं से 12वीं सदी के बीच हुआ । परिणाम हुआ कि उत्तर और दक्षिण दोनों ओर के भारतीय क्षेत्रों पर छोटे-छोटे राज्यों का उदय हो गया । हर्षवर्द्धन ने उन छोटे राज्यों को मिलाकर एक बड़ा राज्य बनाने का असफल प्रयास किया ।

आंध्र, सिंध, विदर्भ और कलिंग के राजा नागभट्ट प्रथम के आगे उसी समय हार चुके थे, जब वे राजकुमार थे। उन्होंने कन्नौज के राजा चक्रयुद्ध को भी हरा दिया ।' उन्होंने वंग, अनंत, मालवा के राजाओं को पराजित किया । कहीं-कहीं शासक प्रजा द्वारा भी नियुक्त किये गए । बंगाल का राजा गोपाल ऐसा ही नियुक्त शासक था । इसने पाल वंश की नींव रखी । कश्मीर में एक महिला शासक भी थीं जिनका नाम दिद्दा था, मंत्रियों और सेना की मदद से शासिका बनी थीं ।

व्यापारियों के संगठन के साथ सत्ता में साझेदारी करता था। भू-राजस्व उपज. का तीसरे भाग से लेकर छठे भाग तक वसूला जाता था ।

निम्न वर्गीय लोगों में राज्य पर संकट के समय कुछ करने की भावना नहीं थी । इस काल में परम्परागत चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के अलावा अनेक नई जातियों और उपजातियों का प्रादुर्भाव हो गया । अब वर्ण-व्यवस्था जन्मना से हटकर कर्मणा हो गई थी।

महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद भी तुर्क और अफगानों का आक्रमण जारी रहा और अंततः वे भारत में स्थायी साम्राज्य की स्थापना में सफल रहे । इस जीत का हीरो मुहम्मद गौरी (गौरी) था । अनेक बार हारने के बाद अंततः वह 1192 में पृथ्वीराज को हराकर दिल्ली तक पहुंच गया और दिल्ली सल्तनत की स्थापना कर लौट गया । तब से दिल्ली में सुल्तानों का शासन आरंभ हुआ ।

उन दिनों दक्षिण भारत में भी अनेक छोटे-छोटे राज्य थे । प्रमुख राज्य राष्ट्रकूट तथा चालुक्य थे । फिर सुदूर दक्षिण में चोल, चेल और चालुक्य और पाण्ड्य प्रमुख थे।

अंत में चोल राजाओं ने तंजौर के आसपास के क्षेत्र तमिलनाडु से अपना शासन प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे पल्लव वंश के शासक आदि को हटाकर उन्होंने अपने को दक्षिण भारत में एक मजबूत साम्राज्य का राजा बना लिया। तंजौर भी इसी के अधीन था । चोल वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा राजराज प्रथम और उसका पुत्र राजेन्द्र चोल था। हालाँकि इस राज्य का संस्थापक विजयालय था जिसकी मृत्यु 871 में हो गई । राजेन्द्र चोल एक

https://www.evidyarthi.in/

महत्वाकांक्षी शासक था, जिसने श्रीलंका से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया। चोल राज्य अब राष्ट्र कहा जाने लगा। प्रशासन की सुविा के लिये सम्पूर्ण राज्य अनेक इकाइयों में बँटा था, जिन्हें मंडलम कहा जाता था।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/